डॉ॰ संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज, आरा

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

प्रथम अंक

1· या सृष्टिः स्रष्टुराद्या, वहति विधिहुतं या हविर्या च होत्री,
ये द्वे कालं विधत्तः, श्रुतिविषयगुणा या स्थिता व्याप्य विश्वम्।
यामाहुः सर्वबीजप्रकृतिरिति यया प्राणिनः प्राणवन्तः,
प्रत्यक्षाभिः प्रपन्नस्तनुभिरवतु वस्ताभिरष्टाभिरीशः ॥

अन्वय – या स्रष्टुः आद्या सृष्टिः, या विधिहुतं हविः वहति, या च होत्री, ये द्वे कालं विधत्तः, श्रुतिविषयगुणा या विश्वं व्याप्य स्थिता, यां सर्वबीजप्रकृतिः इति आहुः, यया प्राणिनः प्राणवन्तः, ताभिः प्रत्यक्षाभिः अष्टाभिः तनुभिः प्रपन्नः ईशः वः अवतु ॥

व्याख्या – भगवान शिव की 'जलमयी मूर्ति' जो कि विधाता की सर्वप्रथम सृष्टि है, विधि विधानपूर्वक हवन की गई सामग्रियों को देवताओं के समीप पहुँचाने वाली अग्नि स्वरूपा मूर्ति, भगवान शिव की यजमान रूपा मूर्ति, समय का विधान करने वाली सूर्य एवं चन्द्ररूपिणी दो मूर्तियाँ, श्रवणेन्द्रिय विषयीभूत शब्दरूप गुण का आश्रय वाली आकाशरूपा मूर्ति जो सम्पूर्ण संसार को व्याप्त करके विद्यमान है, क्षितिरूपा मूर्ति जो कि सब प्रकार के अन्नादि बीजों की उत्पत्ति का कारण कही गई है तथा वह वायुरूपा मूर्ति जिससे संसार के सभी चेतन प्राणी जीवन धारण कर सामर्थ्यवान रहते हैं। इन उपर्युक्त प्रत्यक्ष दृश्यमान अष्ट मूर्तियों से युक्त ईश अर्थात् भगवान शिव आप सभी लोगों की अर्थात् पाठकों, दर्शकों एवं नाटकों की रक्षा करें

प्रस्तुत पद्य महाकवि कालिदास द्वारा नान्दी पाठ के रूप में प्रस्तुत किया गया है। शास्त्रीय ग्रन्थों में नान्दी शब्द के अनेक प्रकार के लक्षण व व्युत्पत्तियाँ की गई है। सामान्यतः नन्दन्ति देवा अत्रेति नान्दी अर्थात् जहाँ देवता आनन्दित होते है, अपनी स्तुति के द्वारा प्रसन्न होते हैं। वह नान्दी है।

⇒ नाटक की निर्विघ्न समाप्ति के लिए सर्वप्रथम जो देवस्तुति की जाती है, उसे नान्दी कहते हैं।

⇒ साहित्यदर्पण में इसका लक्षण इस प्रकार किया गया है —

" आशीर्वचनसंयुक्ता स्तुतिर्यस्मात् प्रयुज्यते।
देवद्विजनृपादीनां तस्मान्नान्दीति संज्ञिता॥

अर्थात् देव, द्विज, नृप आदि की जिसके द्वारा आशीर्वादयुक्त स्तुति की जाती है, उसे नान्दी कहा जाता है।

संस्कृत साहित्य के नाट्यों का प्रारम्भ प्रायः इसी प्रकार के नान्दी श्लोकों के द्वारा किया जाता है। इसे हम मंगलाचरण कह सकते हैं। ये मंगलाचरण पद्य प्रायः तीन प्रकार के प्राप्त होते हैं।

i) आशीर्वादात्मक

ii) नमस्कारात्मक

iii) वस्तुनिर्देशात्मक

प्रस्तुत नाटक अभिज्ञानशाकुन्तलम् में महाकवि कालिदास ने ~~जिस~~ नान्दी के रूप में जिस श्लोक की रचना की है वह आशीर्वादात्मक एवं वस्तु-निर्देशात्मक है।

प्रस्तुत श्लोक में स्रग्धरा छन्द है। जिसका लक्षण है — "म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुतास्रग्धरा कीर्तितेयम्।" 'स्रष्टुः सृष्टिः', 'व्याप्य विश्वम्', 'प्राणिनः प्राणवन्तः' इत्यादि पदों में छेकानुप्रास तथा अन्यत्र वृत्यनुप्रास का प्रयोग किया गया है।

—x—